कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या..............................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [| | | | | |]

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ------------------------------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय ....Geography....

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर.................. संकेतांक [| | | |]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. कीमचोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 163 / 2018

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1.	एन्थ्रोपो - ज्योग्राफी पुस्तक जर्मन भूगोलवेत्ता 'फ्रेडरिक रेटजेल' ने लिखी।
	2.	उत्तरी गोलार्द्ध में विश्व की 95 प्रतिशत जनसंख्या पायी जाती है। (2011 के अनुसार)
	3.	कोटा जिले में सांगोद (खुर्द) गाँव में मिश्रित ग्रामीण आधिवास पाया जाता है। इसके साथ टिप्पड़ाह भी उदाहरण है
	4.	ट्रांस साइबेरियन रेलमार्ग सेंट पीट्सबर्ग (लेनिनग्राड) से व्लाडिवोस्टक तक है।
	5.	भेड़ पालन में भारत का विश्व में स्थान चीन के बाद दूसरा है।
	6.	भारत में योजना आयोग 15 मार्च, 1950 को गठित हुआ।
	7.	धारावी बस्ती में सड़के अत्यधिक सकड़ी है तथा घटते-घटते आधी से भी कम रह गयी है। इसीलिए तिपाहिया वाहन निषेध है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. परिवहन वह अवस्था है या प्रवाह है जिसमे कोई व्यक्ति या वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह किसी भी साधन से ले जाया जाता है।
जबकि संचार में तरंगो, ध्वनियो या तारो आदि की सहायता से दो व्यक्तियों के मध्य आपसी वैचारिक आदान- प्रदान होता है।

9. जैविक संसाधनो में प्रजनन क्षमता पायी जाती है। जिसमे उनकी सततता बनी ही रहती है। वे संसाधन इसी कारण समाप्त नही होते है।

10. भारत में नियोजन की आवश्यकता :-
(i) देश मे संसाधनों के उचित उपयोग हेतु,
(ii) देश में विकास को सतत रूप से बनाये रखने हेतु नियोजन की आवश्यकता है।

11. राजस्थान में 67 प्रकार के खनिज पाये जाते है। जिसमें 57 प्रधान रूप से खोदे जाते है। भण्डारो की दृष्टि से दूसरा तथा उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का देश में तीसरा स्थान है। इसीलिए से खनिजों का अजायबघर कहते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12. जनसंख्या एवं प्रदेशों के संसाधनों की व्यूह रचना करने हेतु हम भूगोल में 'मानव भूगोल' शाखा को चुनेंगे।

13. प्राकृतिक आपदाओं में शीघ्र राहत हेतु वायु परिवहन उचित माध्यम है। जैसे - हवाई जहाज, सैन्य विमान।

14. द्वितीयक व्यवसाय :-

वे सभी व्यवसाय जिनमें प्राथमिक स्तर से प्राप्त कच्चे माल का विनिर्माण प्रक्रिया द्वारा उपयोगी वस्तु में परिवर्तित किया जाता है। द्वितीयक व्यवसाय कहलाता है। जैसे :- गेहूँ - आटा - बिस्किट तैयार करना। रूई / कपास से कपड़े बनाना

उदाहरण :-

ऊर्जा-सम्पादन, प्रसंस्करण, विनिर्माण उद्योग आदि।

15. साक्षरता दर पर प्रभाव डालने वाले चार कारक :-

(i) नगरीकरण का प्रसार - प्रचार होना।
(ii) सरकार द्वारा तय की गयी नीतियाँ।
(iii) लोगों का जीवन स्तर उच्च या निम्न होना।
(iv) प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा संसाधनों की पहुँच या प्रसार होना।

BSEB-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. बुशमैन जनजाति द्वारा शिकार के तरीके :-

(i) बुशमैन जनजाति हड्डियों से बने धनुष-बाण से बड़े पशुओं का शिकार करती हैं।

(ii) विष बुझे तीर, गड्ढे में गिराकर, जहर पिलाकर या फंदे आदि बुशमैन के अन्य शिकार के तरीके हैं।

17. पश्चिमी एवं मध्य यूरोप में जनघनत्व के चार कारण :-

(i) यूरोप के मध्य में लौह-इस्पात एवं कोयले की खदानें होना।

(ii) यूरोप के मध्य एवं पश्चिमी भाग में मनुष्य के अनुकूल समशीतोष्ण जलवायु का होना।

(iii) यूरोप के मध्य एवं पश्चिमी भाग में मनुष्य के अनुकूल खाद्यान्नों एवं परिवहन की सुविधा होना

(iv) भूमध्यसागर और अटलांटिक महासागर पश्चिमी एवं मध्यवर्ती यूरोप में जलवायु को नम बनाये रखते हैं।

(v) परिवहन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार।

18. अप्रैल-दिसम्बर, 2015 में भारत का आयात 351.61 /- $ था। इसके साथ ही निर्यात 239.93/-$ था। (अरब रूपयों में कीमत) इसमें आयात मूल्य ज्यादा था तथा भारत का व्यापारिक घाटा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

351.61 - 233.93 = 117.68/- अरब डॉलर था। यह भारत की व्यापार सन्तुलन की ऋणात्मक दिशा को स्पष्ट करता है। भारत में अधिक आयात मूल्यों से व्यापार घाटा बढ़ा है।

राष्ट्र हित में सुझाव :-

(i) देश में संसाधनों का उचित दृष्टि से उपयोग किया जाये।
(ii) देश में उत्पादन में वृद्धि की जाये।
(iii) देश में उद्योगो की स्थापना अधिकाधिक की जाये।
(iv) 25 दिसम्बर, 2014 से संचालित 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जाये।

19. वायु प्रदूषण रोकने में ईंधन उपयोग सुझाव :-

(i) प्राकृतिक गैस का उपयोग :-

वाहनो एवं उद्योगो में प्राकृतिक गैस संपीडित प्राकृतिक गैस तथा द्रवीय प्राकृतिक गैस का उपयोग बढ़ाया जाये।

(ii) गैर-परम्परागत संसाधनों का उपयोग :-

सौर ऊर्जा, पवन, जैविक ऊर्जा के उपयोग को ईंधन की तुलना में उपयोग वरीयता दी जाये।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20. सतत विकास के दो सुझाव:-

(i) नियोजन प्रणाली से विकास:-

नियोजन प्रणाली से संसाधनो का समुचित, विद्रोहनरहित, आवश्यकतानुसार संरक्षित उपयोग होने से सतत विकास होगा। जिससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

(ii) संसाधनों का संरक्षण:-

संसाधन संरक्षण से तात्पर्य- संसाधनो का मितव्ययतापूर्ण, विनाशरहित तथा आवश्यक रूप से उपयोग से है। इससे हमारे संसाधन भावी पीढ़ियो हेतु भी संरक्षित रहेगे। विकास का सतत रूप होगा।

21. रेखीय व आयताकार ग्रामीण प्रतिरूप:-

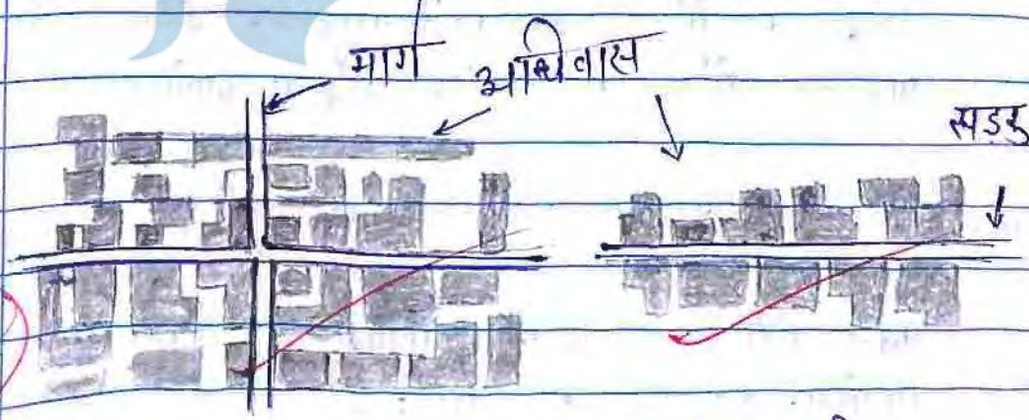

आयताकार प्रतिरूप
रेखाचित्र

रेखीय प्रतिरूप
रेखाचित्र

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

22. रेखा मानचित्र में उत्तर है।

23. रेखा मानचित्र में उत्तर है।

24. रेखा मानचित्र में उत्तर है।

25. भारत में जनसंख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूप :-

कारण :-

(i) मृदा की उत्पादकता :-

भारत में उत्तर के विशाल मैदान में उपजाऊ मृदा पायी जाती है। जो गंगा, सिन्धु व ब्रह्मपुत्र नदियों का परिणाम है। उपजाऊ मृदा के कारण ही उत्तर के मैदान में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि हुयी है। इसी कारण भारत में 'तीव्र जनसंख्या वृद्धि (1951-81)' के बीच हुयी। उपजाऊ मृदा से प्रत्येक आर्थिक गतिविधि सम्पन्न हो जाती है। जिससे जनसंख्या वृद्धि हुयी है।

(ii) खनिजों का खनन :-

खनिजो के खनन के खनन के कारण झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिसा, प. बंगाल में जनसंख्या वृद्धि हुयी। भारत में इन राज्यों में जनसंख्या तीव्र जनसंख्या वृद्धि के काल (1951-81) में बढ़ी तथा मंद वृद्धि के काल (1981 के बाद) में जनसंख्या वृद्धि में ऋणात्मक प्रतिरूप मिलता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) खाद्यान्नो के उत्पादन में वृद्धि:-

भारत में घटती जनसंख्या के काल (1911-21) में जनसंख्या घटी थी; क्योंकि उस समय खाद्यान्न उत्पादन घट गया था। उसके बाद स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हरित क्रांति ने खाद्यान्नो को बढ़ाकर जनसंख्या वृद्धि की।

(iv) प्रतिरूप :- भारत में सर्वाधिक वृद्धि मेघालय में 25.63% सर्वाधिक वृद्धि हुयी। राजस्थान में औसतन 21.00% वृद्धि हुयी। उत्तर भारत के राज्यों में भी जनसंख्या तीव्रता से बढ़ी हैं। भारत में औसतन जनसंख्या वृद्धि 17.31% हुयी हैं। जिनके प्रतिरूप यथादृष्ट हैं।

उत्तर ↑.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

26. जनसंख्या- समाधान (समस्या) के छः सुझाव :-

(i) नियोजन पद्धति को अपनाकर :-
नियोजन पद्धति से संसाधनो का सकुशल प्रयोग होगा। आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी। बेरोजगारी में गिरावट होगी। जिससे रोजगार व जीवन स्तर बढ़ेगा।

(ii) खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाकर :-
जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्य समस्या को एक मुख्य समस्या माना जा रहा है। जिसके लिए उच्च पूंजी निवेश, कुशल प्रबंध, उच्च तकनीक से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ेगा।

(iii) पारिवारिक नियोजन अपनाकर :-
जनसंख्या वृद्धि की समस्या को रोकने में मनुष्य की भागीदारी निभानी होगी। इसके लिए पारिवारिक नियोजन पद्धति को अपनाकर जनसंख्या कम की जायेंगी।

(iv) विवाह आयु में वृद्धि :-
महिला या स्त्री विवाह कम आयु में कर दिये जाने से वे अधिक सन्तान पैदा करती हैं। अधिक आयु में विवाह से कम संताने पैदा होंगी।

(v) पर्यावरणीय सम्बन्धो में वृद्धि :-
जनसंख्या समस्या के समाधान के लिए हमें ऐसा धारित विकास करना होगा जो मानव व पर्यावरण सम्बन्धों को बनाये रखें।

(vi) शिक्षा का उच्च स्तर :-
शिक्षा के उच्च स्तर से

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मानव सभ्यता को जनसंख्या समस्या से अवगत कराया जायेगा। जिससे वे जनवृद्धि नही करेंगे।

27. जल संरक्षण के तीन सुझाव:-

(i) वर्षा जल संचयन:-

वर्षा जल को संचय करके हम अकाल के समय जल की निरन्तरता को बनाये रख सकते हैं। इससे सिंचाई तथा फसलों के उत्पादन दोनो मे वृद्धि होगी। वर्षा जल संचयन की विधियाँ मे राजस्थान मे टांका, खडीन, जोहड, नाड़ी आदि वर्षा जल संचयन के साधन है। तामिलनाडु राज्य मे 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम' को अनिवार्य बना दिया गया है। महाराष्ट्र व आंध्र प्रदेश के सूखा प्रवण क्षेत्रो मे तालाबो के माध्यम से सिंचाई होती है। महाराष्ट्र का रालेगांवसिद्धि ग्राम जल संरक्षण का उदाहरण है।

(ii) जल का पुनःचक्रण:-

जल को पुनः उपयोग मे लाया जाना चाहिए। जल को एक से अधिक कार्यों मे प्रयोग करना चाहिए। जल को पुनः शुद्ध कर मानवीय कार्यों मे उपयोग मे लाया जाये। उद्योगो से निकले जल को पुनः सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट की सहायता से शुद्ध करना चाहिए। स्नान किये जल से बागवानी का कार्य किया जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) जल संभरण कार्यक्रम :-

प्रत्येक जल की बूंद मानव सभ्यता के लिये आवश्यक है। इसके लिए प्रत्येक स्थान पर जाकर हमें नागरिकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना होगा। अलवर जिले में (अरवारी संसद) आंध्रप्रदेश में (नीरु-मीरु कार्यक्रम) तथा राजस्थान पत्रिका द्वारा संचालित 'अमृतम् जलम्' कार्यक्रम प्रशंसनीय है।

जल संरक्षण एवं प्रबन्धन हेतु समोच्च जुताई, मिनी परकोलेशन तथा वनस्पति में वृद्धि आदि अन्य सुझाव हैं।

28. पशुपालन :-

मानव द्वारा पशुपालन का कार्य आर्थिक स्त्रोतों में वृद्धि, खाद्य पदार्थों के उत्पादन, कृषि कार्य तथा परिवहन जैसे कार्यों के लिए किया जाता है। पशुओं के माध्यम से खाद्य पदार्थों में सतता रहती है। पशुपालन से व्यक्ति अतिरिक्त वस्तुओं को बेचकर अपनी आय में वृद्धि करता है। पशुओं से ही देशी खाद, दूध, खोवा, मांस तथा ऊन की प्राप्ति होती है।

(i) विशेषता के आधार पर अन्तर :-

	चलवासी पशुचारण	वाणिज्यिक पशुचारण
(i)	इसमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करके पशु पालन करते हैं।	(i) इसमें एक ही जगह पर रहकर पशुपालन का कार्य किया जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
		चलवासी पशुचारण	वाणिज्यिक पशुचारण
	(ii)	इसमें पशुओं के लिए चारे की निश्चितता नहीं होती हैं।	(ii) इसमें पशुओं के लिए चारा निश्चित रूप से दिया जाता हैं।
	(iii)	इसमें पशुओ को ही आर्थिक समृद्धि माना जाता हैं।	(iii) इसमें पशुओं के उत्पाद मूल्यों को ही आर्थिक समृद्धि माना जाता हैं।
	(iv)	इसमें पशुओं के रहवासी घर नहीं होते हैं।	(iv) इसमें पशुओं के लिए बड़े फार्मों में व्यवस्था की जाती हैं। जो 'रेंच' कहलाते हैं।
	(v)	इसमें पशुओं के स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। बीमारियों का उपचार नहीं होता हैं।	(v) इसमें पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं। बीमारियो से बचाकर रखा जाता हैं।
	(vi)	इसमें पशुओं के लिए पौष्टिक पदार्थ युक्त भोजन नहीं दिया जाता हैं।	(vi) इसमें पशुओं को पौष्टिक पदार्थ युक्त भोजन दिया जाता हैं।
	(vii)	इसमें उत्पादो के प्रबंधन की व्यवस्था नहीं होती हैं।	(vii) इसमें उत्पादन वस्तुओं के प्रबंधन हेतु शीत भण्डार होते हैं।
	(viii)	मरुस्थल एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में।	(viii) शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रेयरी व स्टेपी घास मैदानो में।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) क्षेत्र के आधार पर अन्तर :-

चलवासी पशुचारण	वाणिज्यिक पशुचारण
(i) यह पश्चिमी राजस्थान में रैबारी, गाधरी, हिमालय में गद्दी, बकरवाल तथा सिक्किम में भूटिया तथा कश्मीर में गुज्जर जनजाति द्वारा किया जाता है।	(i) यह यूरेशिया के स्टेपीज, न्यूजीलैण्ड में कैंटरबरी, आस्ट्रेलिया के डाउन्स, उत्तरी अमेरिका के पम्पाज, वेनुजेएला के लानोस, सूडान के सवाना घास क्षेत्रों में किया जाता है।

29. गेहूँ :-

यह भारत की मुख्य दूसरी खाद्यान्न फसल है। यह एक समशीतोष्ण कटिबंधीय फसल है। जो उत्तर भारत में मुख्य रूप से उगायी जाती है। भारत में विश्व का 11.7 प्रतिशत गेहूँ उत्पादित होता है।

(i) भौगोलिक दशाएँ :-

(i) तापमान एवं जलवायु :-

यह समशीतोष्ण कटिबंधीय फसल है। जिसे बोते समय 10° से० बढ़ते समय 15° से० पकते समय 20° से० तथा कटते समय 28° से० तापमान की आवश्यकता होती है। 100 दिन तक खुली धूप आवश्यक होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) आर्द्रता या जल:-
गेहूँ को 100 सेमी. अधिकतम तथा 50 सेमी. न्यूनतम जल की आवश्यकता होती है। इससे कम होने पर सिंचाई की आवश्यकता होती है।

(iii) मृदा:-
इसमें (गेहूँ) मृदा हल्की, बलुई, दोमट, कछारी, जलोढ़ मृदा अधिक श्रेष्ठ रहती है। उर्वरकों से मरुस्थल में भी उत्पादन कम मात्रा में हो रहा है।

(iv) धरातल:-
गेहूँ की फसल को समतल धरातल की आवश्यकता होती है। जिससे सिंचाई कार्य शीघ्र हो जाता है।

(v) श्रम:-
गेहूँ में बुवाई, कटाई तथा खरपतवार को कम करने हेतु, रसायनों के छिड़काव में सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है।

(vi) पूंजी एवं बाजार:-
गेहूँ की फसल में उच्च तकनीक, पूंजी निवेश तथा मानवीय श्रम में पूंजी आवश्यक है। अतिरिक्त उत्पादन को बेचने हेतु बाजार आवश्यक होता है।

(ii) गेहूँ उत्पादन एवं वितरण:-

(i) उत्तर प्रदेश:-
उत्तर प्रदेश भारत में आदर्श गेहूँ उत्पादक राज्य है। उत्तर प्रदेश में 28.3%

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

गेहूँ का उत्पादन किया जाता है। उत्तरप्रदेश में पश्चिमी जिले प्रमुख उत्पादक जिले हैं। जिनमें रायबरेली, सीतामढ़ी, बहराइच, कानपुर, मेरठ, लखनऊ आदि प्रमुख उत्पादक जिले हैं।

(ii) पंजाब :-

पंजाब सिंचाई सुविधाओं से प्रमुख गेहूँ उत्पादक राज्य बन गया है। जिसमें संगरूर, अबोहर, अमृतसर, बठिण्डा, मुक्तसर आदि प्रमुख उत्पादक जिले हैं, जो देश का लगभग 12% उत्पादन करते हैं।

(iii) हरियाणा :-

हरियाणा में भी रोहतक, सोनीपत, पानीपत, रेवाड़ी, गुरुग्राम आदि प्रमुख उत्पादक जिले हैं। जो 7% उत्पादन करते हैं।

(iv) मध्यप्रदेश :-

मध्यप्रदेश देश में 9% गेहूँ उत्पादित करता है। जिसमें मालवा पठार, विंध्य क्षेत्र तथा बुन्देली क्षेत्र प्रमुख हैं।

(v) राजस्थान :-

राजस्थान 6% गेहूँ उत्पादित करता है। जिनमें घग्घर का मैदान तथा पूर्वी क्षेत्र के अलवर, भरतपुर, धौलपुर, जयपुर प्रमुख जिले हैं।

(vi) अन्य राज्य :-

अन्य उत्पादक राज्य पश्चिमी बिहार, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड आदि हैं। जो सबसे कम उत्पादन करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

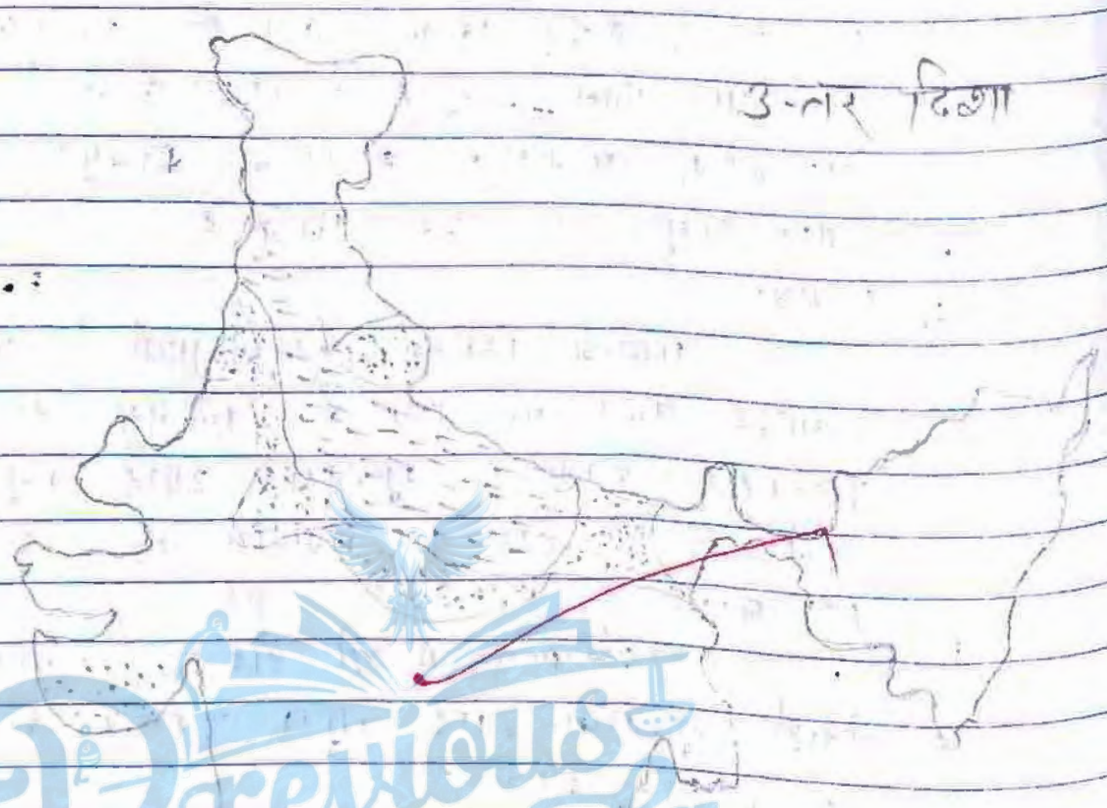

उत्तर दिशा

संकेत:-

- मुख्य गेहूँ उत्पादक क्षेत्र
- गौण गेहूँ उत्पादक क्षेत्र

भारत: गेहूँ वितरण

Previous Pathshala

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

30. भील तथा मीणा जन जातियों में तुलना :-

(i) क्षेत्र के आधार पर अन्तर :-

भील - जनजाति	मीणा - जनजाति
(i) ये मुनि अवतार 'मत्स्य' को अपना कुल देव मानते हैं।	(i) ये मुनि अवतार विष्णु या मत्स्यावतार के वंशज हैं।
(ii) भील जनजाति कोटिया (कोटा) डेआवा (उदयपुर), सिरोही तथा डूंगरपुर जिले में मुख्यतया आवास करती है। इनके आवास मुख्य दुर्गम वन हैं।	(ii) मीणा राजस्थान में अलवर, भरतपुर, जयपुर, कोटा, टोंक, अजमेर में रहते हैं। ये लोग गाँवो में रहने लगे हैं। जो दुर्गम क्षेत्रों में होते हैं।

(ii) सामाजिक जीवन के आधार पर अन्तर :-

भील जनजाति	मीणा जनजाति
(i) इनमें वर्गों के आधार पर विभाजन नहीं होता है।	(i) इनमें समाज में दो वर्ग- जमींदार मीणा तथा चौकीदार मीणा होते हैं।
(ii) ये राजस्थान की दूसरी बड़ी जनजाति हैं।	(ii) ये राजस्थान की पहली बड़ी जनजाति है।
(iii) भीलो में स्थानान्तरित कृषि में चिमाता तथा दाजिया प्रमुख है।	(iii) मीणा जनजाति में स्थानान्तरित कृषि का कार्य जमींदार वर्ग करता है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
		भील जनजाति	मीणा जनजाति
	(iv)	भीलों में पहाड़ों पर की जाने वाली कृषि 'चिमाता' तथा मैदानों में की जाने कृषि 'दामिया' होती है।	(iv) मीणा जनजाति में 'बालरा' कृषि की जाती है। जिसमें श्रमिक वर्ग की अधिकता रहता है।
	(v)	भीलों में पहाड़ी क्षेत्रों के भील पालवी तथा मैदानी क्षेत्रों के भील बागड़ी कहलाते हैं।	(v) मीणा जनजाति में बड़े गांवों को 'पाल' तथा छोटे छोटे गांवों को 'चला' कहते हैं।
	(vi)	भीलों का प्रमुख मेला माघ शुक्ल पूर्णिमा को माही, सोम जाखम के संगम पर बेणेश्वर मेला है।	(vi) मीणा जनजाति में प्रमुख मेला महावीरजी तथा सीकर एवं सवाईमाधोपुर में शीतला मेला है।
	(vii)	भीलों में वस्त्र पुरुषों में पोत्या तथा धोती है। स्त्रियाँ कांचली, लूगड़ी पहनती है।	(vii) मीणा जनजाति में पुरुष पारम्परिक वस्त्र तथा स्त्रियां कांचली, ओढ़नी, घाघरा पहनती हैं।

(iii) अर्थव्यवस्था के आधार पर अन्तर:-

भील जनजाति	मीणा जनजाति
(i) भीलों की अर्थव्यवस्था वनों पर आधारित है।	(i) मीणा में अर्थव्यवस्था पशु व कृषि पर आधारित है।

Sl.No. 030970

नामांक Roll No.

SS–14–Geog.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

Subject : GEOGRAPHY

3-तर = 22

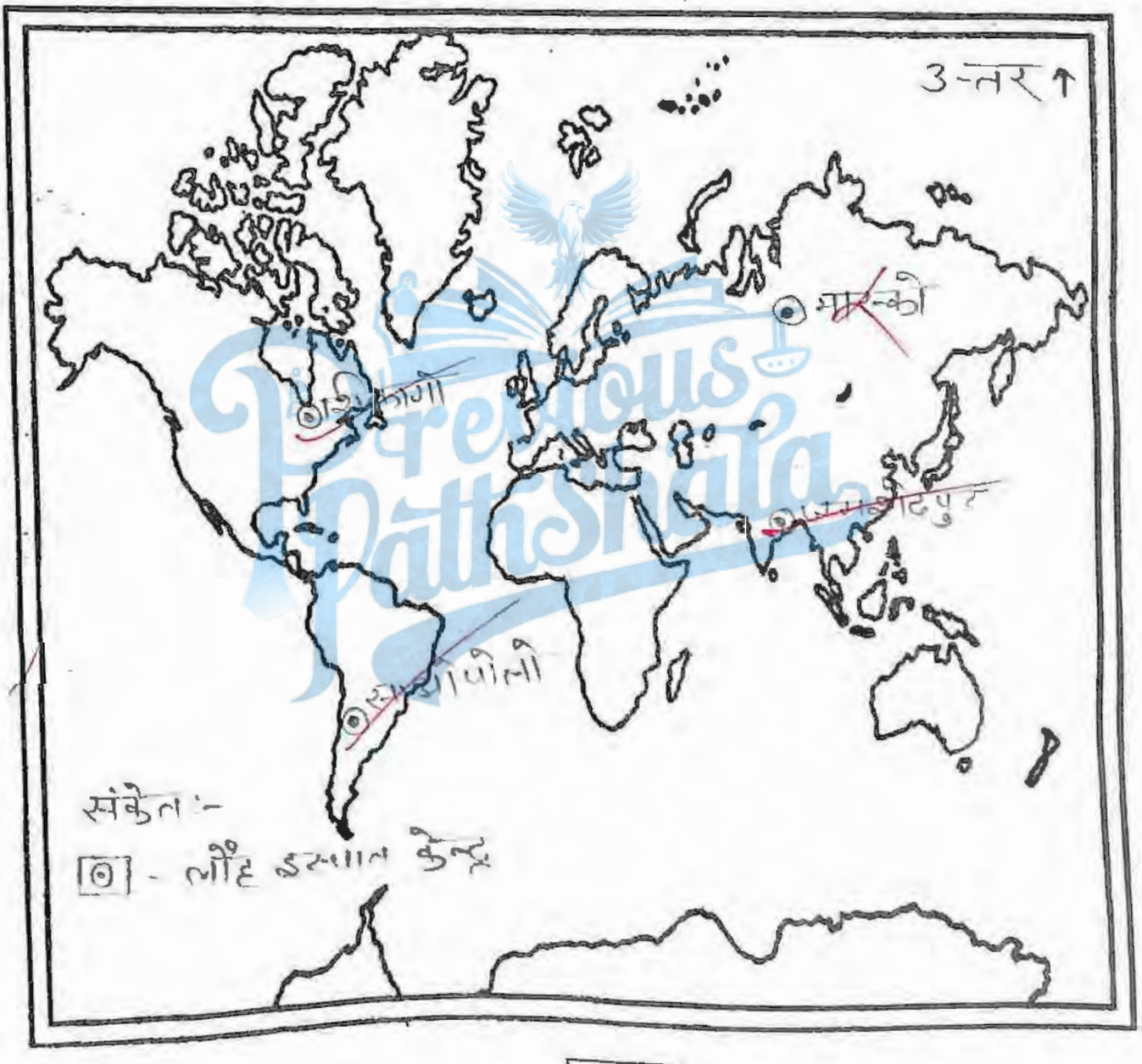

Sl.No.: 030970

नामांक Roll No.

SS–14–Geog.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

Subject : GEOGRAPHY

3-तर = 23

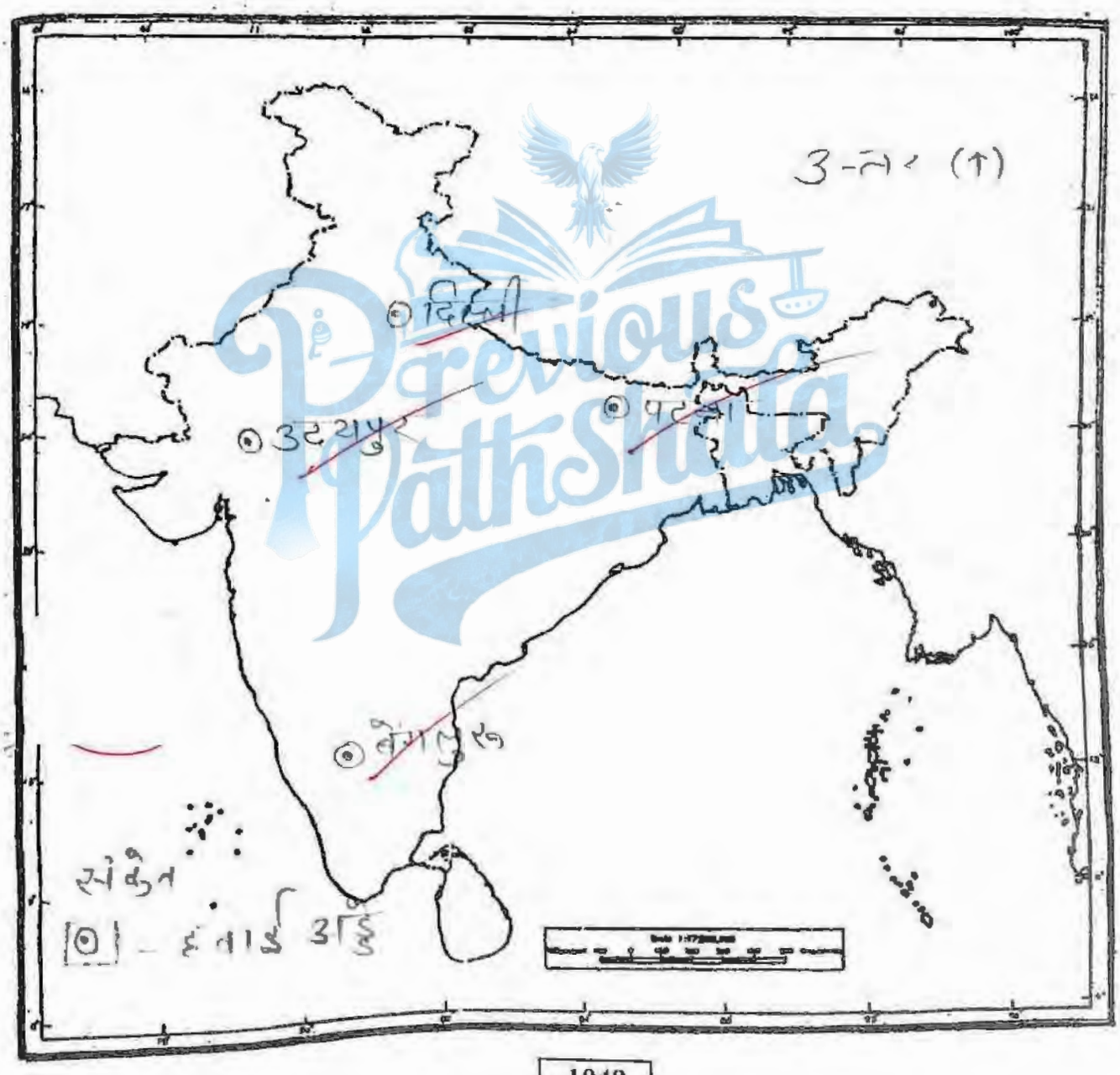

Previous Pathshala

Sl.No. : 000070

नामांक Roll No.

B

SS–14–Geog.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

Subject : GEOGRAPHY

3 उत्तर = 24

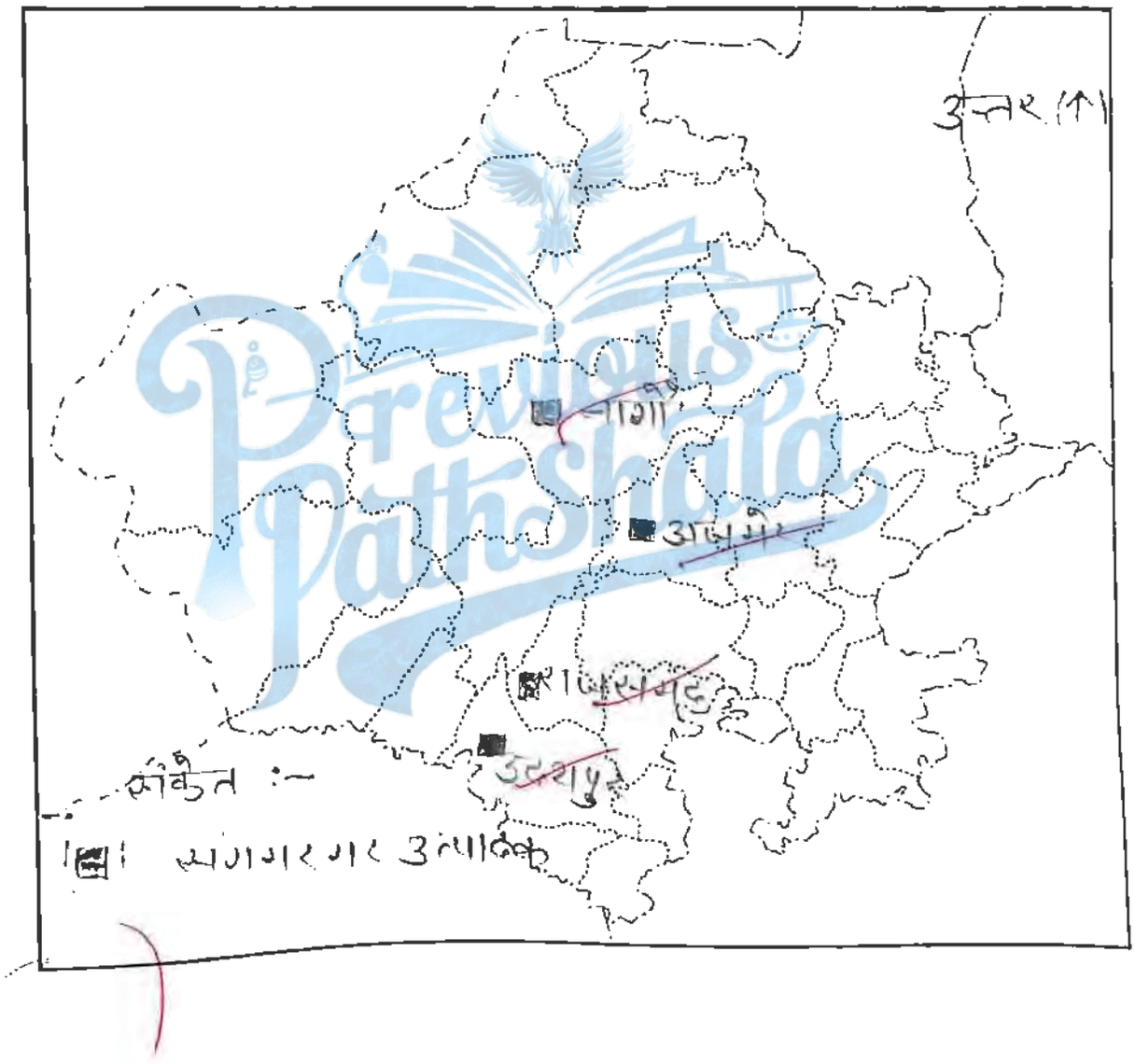

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
	(ii)	भीलों में संग्रहकरण, पशुचारण, शिकार आदि पारम्पारिक अर्थव्यवस्था के आधार हैं।	(ii) मीणा जनजाति में चौकीदार मीणा अंग्रेजों की सेना में रहे हैं। तथा चौकीदारों को वेतनमान मिलता था।
	(iii)	ये वनों पर ही आज भी आश्रित हैं। शिकार वर्जित हैं। फिर भी छोटे शिकार करते हैं।	(iii) मीणा वर्तमान में प्रशासन में भी कार्यरत हैं। आरक्षण ने मीणा के जीवन स्तर को सुधारा है।
	(iv)	ये दीपा तथा घैण्ड़ा कृषि करते हैं।	(iv) ये हरियो रौबदो कृषि करते हैं।

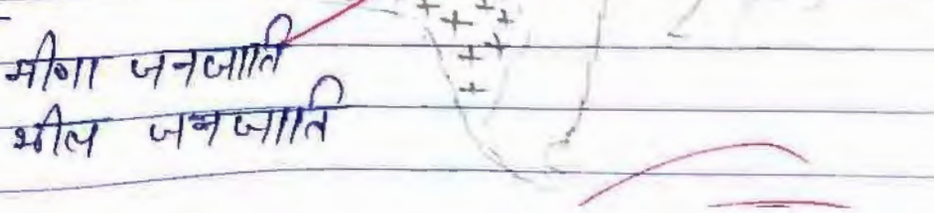

संकेत:-

[☰] - मीणा जनजाति

[+] - भील जनजाति